9) भारतीय स्त्रियों के उद्धार की दिशा में गाँधीवादी विचारधारा एक नई रोशनी लाती है। स्त्रियों का स्थान पुरुषों की तरह ही गाँधी जी के आदर्श समाज में महत्त्वपूर्ण है। इन दोनों के मध्य किसी प्रकार का भेद अवैज्ञानिक है क्योंकि दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं। किन्तु एक स्थान पर पहुँचकर दोनों के काम अलग हो जाते हैं। स्त्री सहन करने वाली होती है, पुरुष करने वाला होता है। इसलिए स्त्री परिवार की मालकिन एवं स्वभव से पालिका होती है, पुरुष कमाने वाला होता है। गाँधी जी के अनुसा "मेरी राय में इससे स्त्री और पुरुष दोनों का पतन है कि स्त्री को घर छोड़कर घ की रक्षा के लिए बन्दूक उठाने को कहा जाये। पर साथ ही उन्हें पुरुषों की त समान अधिकार और शिक्षा मिलनी चाहिए। विवाह के चुनांव में उनसे राय ले चाहिए। विधवा विवाह पर कोई रोक नहीं होनी चाहिए। अन्तर्जातीय विवाह किसी रूप में अहितकर नहीं है। आवश्यकता पड़ने पर उसे अपनाया जा सकता है। वेश्यावृत्ति और देवदासी प्रथा आदि कुप्रथाओं को जड़ से उखाड़ फेंकना होग गाँधी जी ने लड़कियों द्वारा अधिक फैशन करने की आदत को गलत ठहराय क्योंकि यह नियम प्रकृति के विरुद्ध है।

1.2. डॉ. राम मनोहर लोहिया (DR. R. M. LOH

1.2.1. परिचय (Introduction)

डॉ. राम मनोहर लोहिया का जन्म 23 मार्च, 1910 को उत्तर प्रदेश के अम्बेडकर नगर जिले के अकबरपुर में हुआ था। यह एक वैश्य परिवार से सम्बन्ध रखते थे तथा 20वीं सदी के दौरान एक महान नेता थे। लोहिया के व्यवसाय में लेन–देन करने के कारण उनके पूर्वजों द्वारा उपनाम 'लोहिया' प्रदान किया गया था। राष्ट्रवाद की भावना तथा गरीबों एवं जरूरतमंदों के लिए प्रेम एवं स्नेह उन्हें उनके पिता हीरालाल से विरासत में मिला था, जोकि एक राष्ट्रवादी थे। बचपन में उनके द्वारा व्यतीत किया गया जीवन का पर्यावरण जातिवाद से स्वतन्त्र था। गरीब, जरूरतमंद, दलित तथा कमजोर वर्ग की सहायता क भावना उनमें बचपन से ही विकसित हो गई थी। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा अप स्थान अकबरपुर में प्राप्त की। उन्होंने 1925 में मारवाड़ी विद्यालय, बॉम्बे से मै 1927 में काशी विश्वविद्यालय, बनारस से इंटरमीडिएट पास किया।

बाद में, वर्ष 1929 में उन्होंने विद्यासागर कॉलेज, कलकत्ता से स्नातक किया। उन्होंने अपनी पीएच.डी. बर्लिन से की। उन्होंने 1920 में लोकमान्य तिलक की स्कूलों में हड़ताल आयोजित करने की एक बड़ी पहल की तथा उस समय ले 10 वर्ष के थे। वह भारत को विदेशियों के शासन से स्वतन्त्र कराना चाहते थे उनका प्रमुख जुनून था। इसी जुनून को पूरा करने के लिए वह बहुत कम स्वतंत्रता सेनानी बन गए थे। उन्होंने 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के आय महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। स्वतंत्रता की सफल उपलब्धि ने लोहिया को देश लिए विभिन्न आंदोलनों के संगठन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रे उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर दिया था। उ में लोकतंत्र की स्थापना हेतु लड़ने के लिए गोवा का दौरा किया। पश्चिमी सा परास्त करने के अतिरिक्त, उन्होंने 1956 में हंगरी में सोवियत संघ के प्रेरणास्रोत के रूप में रहे तथा तिब्बत में चीनी सैनिकों के विरुद्ध आवाज उठाई

नका प्रमुख योगदान आधुनिक पूँजीवाद का विश्लेषण तथा प्रदर्शन करने में था। इसके तिरिक्त, भौतिक सुख–सुविधाओं के माध्यम से लोगों के लिए अधिकतम कल्याण निश्चित करने तथा व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास के लिए स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने एक समाजवादी व्यवस्था का प्रस्ताव रखा। वह पूँजीवाद, समाजवाद, मशीनों के उपयोग, औद्योगीकरण, समानता, विभिन्न आर्थिक कार्यक्रमों तथा स्थानीय सरकारों के सम्बन्ध में बहुत स्पष्ट विचार रखते थे।

.2.2. डॉ. राम मनोहर लोहिया की रचनाएँ (Creations of Ram Manohar Lohiya)

डॉ. राम मनोहर लोहिया ने अनेक विषयों पर अपना विचार लेख एवं पुस्तकों के रूप में काशित की। उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं–

) इतिहास चक्र
) अंग्रेजी हटाओ
) धर्म पर एक दृष्टि
) देश, विदेश नीति कुछ पहलू
) भारतीय शिल्प
) भारत विभाजन के गुनहगार
) मार्क्सवाद और समाजवाद
) राग, जिम्मेदारी की भावना, अनुपात की समझ
) समतथ्य, समबोध
0) समृदृष्टि
1) समाजवादी चिंतन
2) सच, कर्म, प्रतिकार और चरित्र निर्माण आह्वान
3) संसदीय आचरण
4) सम्पूर्ण और संभव बराबरी और दूसरे भाषण
5) हिन्दू बनाम हिन्दू

.2.3. भारतीय समाज पर डॉ. राम मनोहर लोहिया का दृष्टिकोण Dr. Ram Manohar Lohiya's Views on Indian Society)

ॉ0 राममनोहर लोहिया (1910–1967) का नाम भारत के समाजवादी चिन्तन में प्रमुख है। ोहिया बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी थे। राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ वे विद्यार्थी अवस्था से ही ुड़े थे। उन्होंने समाजवादी मंच के गठन में योगदान कांग्रेस में रहकर दिया। भारत छोड़ो ान्दोलन में सन् 1942 में वह द्वितीय पंक्ति के प्रमुख नेता थे। उनके भाषण आलोचना एवं ाँकड़ों से परिपूर्ण होते है। उन्होंने भारत के समाजवादी आन्दोलन की प्रगति में ल्लेखनीय योगदान दिया है। सन् 1953 में उनके प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप एशियाई माजवादी सम्मेलन सम्पन्न हुआ। समाजवादी आन्दोलन को आगे बढ़ाने में इनकी विशेष मिका थी। उन्होंने गाँधीवाद को समाजवादी चिन्तन में प्रमुखता देने हेतु एक सच्चें ंधीवादी के रूप में प्रयास किया। कांग्रेस समाजवादी दल के अध्यक्ष के रूप में सन् 1952 उन्होंने अपना समर्थन समाजवादी चिन्तन में गाँधीवादी विचारों के अधिक शामिल करने दिया। वह गाँधी एवं मार्क्स दोनों से प्रभावित थे। परन्तु न वह पूरे मार्क्सवादी ही बने ोर न ही गाँधीवादी बन पाए। उन्होंने समाजवाद की मौलिक रचना भारतीय परिस्थितियो अनुसार की। लोहिया ने समाजवाद को भारत में मजबूत प्रदान करने हेतु भारतीय ामाजिक व्यवस्था का गहनता के साथ अध्ययन किया। उनके अनुसार भारत विकसित

राष्ट्र तभी बन पाएगा जब हमारी सामाजिक व्यवस्था की कमियाँ समाप्त हो
भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियाँ जिनमें नर–नारी असमानता, जाति–प्रथा,
रंगभेद–नीति एवं साम्प्रदायिकता को मूल कारण मानते थे। डॉ. राम मनोहर लोहि
समय के भारतीय सामाजिक व्यवस्था को देखते हुए उसकी निन्दा की। वे हिन्दू
भी हिन्दू धर्म एवं समाज की मूल मान्यताओं के विरोध में खड़े थे। भारतीय समाज
डॉ. राम मनोहर लोहिया के विचार निम्नलिखित है–

1) **सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार कर्म होना चाहिए न कि धर्म (Basis o**
Prestige should be Work not Religion)–डॉ. राम मनोहर लोहिया

वर्ग के लोगों को हर क्षेत्र में प्राथमिकता देने पर बल देते थे। वे उन्हें आठ प्रतिशत (8%) आरक्षण देने के पक्षधर थे ताकि समाज में उन्हें सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त हो सके। लोहिया कमजोर एवं पिछड़े वर्ग के लोगों को नेतृत्व के पदों पर देखना चाहते थे। इस प्रकार लोहिया की दृष्टि में समान अवसर नहीं, बल्कि प्राथमिकता पर आधारित अवसर इन संकुचित बंधनों की दीवारों को ढहा सकता है।

6) **व्यक्तिगत स्वतंत्रता (Personal Freedom)**–राम मनोहर लोहिया व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक थे। उनका कहना था कि मनुष्य को निर्बाध गति से विश्व के किसी भी कोने में स्वतंत्र रूप से जाने एवं भ्रमण करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। वे वर्तमान में चल रहे पासपोर्ट पद्धति के विरोधी थे। उनका ऐसा कहना था कि यदि हमारे देश का नागरिक दिल्ली, बम्बई या नागपुर में निवास कर सकता है। तो उसे यह भी आजादी होनी चाहिए की वह लन्दन, न्यूयार्क या सिडनी में जाकर निवास कर सके। चिन्तन और भाषा कि स्वतंत्रता भी व्यक्तियों को प्राप्त होनी चाहिए। यद्यपि यह ठीक है कि कार्य व्यवहार उसी भाषा में हो जिसे बहुसंख्यक समुदाय चाहता है फिर भी अलपसंख्यकों को अपनी बात करने की पूरी आजादी होनी चाहिए।

7) **रंग–भेद के विरोधी (Anti-Apartheid)**–डॉ. लोहिया रंग–भेद के प्रबल विरोधी थे। वे हर स्तर पर इसका विरोध करते थे। प्रायः लोगों के दिमाग में यह बात चलती है कि जिसका रंग गोरा होता है वह दिमाग का भी तेज होता है। लोहिया ने इस भ्रम का विरोध किया और राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर रंगभेद के विरोध में तीव्र जनमत तैयार किया। लोहिया ने जुलाई 1851 में अमेरिका में हॉवर्ड विश्वविद्यालय में भाषण देते हुए रंगभेद नीति की निन्दा की और निग्रो लोगों को सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ करने की सलाह दी।

8) **जाति प्रथा के विरोधी (Opposition to Caste System)**–जाति प्रथा एवं वर्ण–व्यवस्था के आधार पर भारत में जो सामाजिक तथा आर्थिक असमानताएँ हैं, उसे समाप्त करने हेतु क्रांति की आवश्यकता हैं। हमारे समाज में किसी न किसी रूप में आज भी जाति प्रथा देखने को मिलती है तथा जाति प्रथा का कुप्रभाव समाजिक विकास को प्रभावित करता है। डॉ0 लोहिया ने जाति से ऊपर उठकर हमेशा से ही एक इस प्रकार के समाज की परिकल्पना की जहाँ सभी एक समान हों। वर्तमान भारतीय समाज से जाति प्रथा जो कि एक दंश के समान है समाप्त हो जाए तो निश्चित ही भारतीय समाज उन्नति करेगा। अतः इसके लिए लोहिया जी द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलते हुए क्रांति करने की आवश्यकता है। डॉ0 लोहिया जाति प्रथा का विरोध करते थे, उनके मतानुसार जाति प्रथा समाजवाद के मार्ग की प्रमुख बाधा है। जाति के करण समाज में असमानता उत्पन्न होती है। डॉ0 राममनोहर लोहिया ने कहा है, "जीवन के बड़े–बड़े तथ्य जन्म, मृत्यु, शादी, भोज ब्याह, और सभी रस्में, जाति के चौखट में होती है। ऐसे मौकों पर दूसरी जाति के लोग किनारे पर रहते हैं, जैसे वे तमाशाबीन हो" निम्न वर्ग जाति प्रथा के कारण शोषित होता है एवं जाति उन्हें उन्नति के अवसरों से अलग रखती है।

9) **स्त्री और पुरुष के मध्य असमानता (Inequality Between Men and Women)**–डॉ0 लोहिया पुरुषों एवं महिलाओं की समानता के प्रबल पक्षधर थे। वे प्रायः स्त्रियों को पुरुषों की अधीनता के खिलाफ आवाज उढ़ाने की हिम्मत देते थे। उन्होनें यह स्पष्ट कहा था कि स्त्रियों को पुरुषों के समकक्ष स्थान दे कर ही एक स्वस्थ एवं सुव्यवस्थित समाज को निर्मित किया जा सकता है। वह महिलाओं के ऊपर पुरुषों द्वारा थोपी गई नारी की पराधीनता तथा उसके लिए स्त्रियों द्वारा दी